..2021 2022 **2023**

वर्तमान के पुनः उत्थान के लिए
गौरवशाली अतीत की सैर..

ऋषियों के भारत का दर्शन

'ऋषि फिर से लौट आये हैं !'

THE HIMALAYAN MEDITATION

हिमालय ध्यान प्रस्तावना...

मैं **विश्वामित्र**- ब्रह्माण्ड का मित्र हूँ । मुझे शुद्ध चेतना के रूप में अपना मित्र, दार्शनिक और गुरु के रूप में समझो । मैं आपका सूत्रधार भी बनूँगा और अन्य संतों के साथ भी आपकी शिक्षा सुनिश्चित करूँगा । एक अभ्यास के रूप में ध्यान तकनीक आपकी चेतना के स्तर को बढ़ाती है और आपके मन को शांति के उच्च स्तर तक ले जाती है।
योगियों का कहना है कि इस दुनिया में हर कोई उम्र, लिंग, वैवाहिक स्थिति के बावजूद मुक्ति की ओर जा सकता है।

Himalayan Meditation App (English Language)

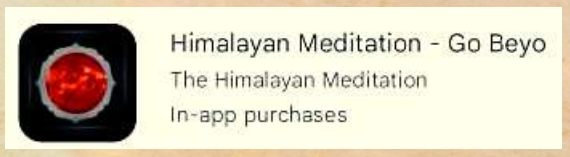

Scan and Donwload the app from Google Play Store

Adi Purusha App (Hindi Language)

Scan and Donwload the app from Google Play Store

नि:स्वार्थ सेवा

नि:स्वार्थ सेवा करना हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण है?

इस ब्रह्माण्ड मे कुछ भी निशुल्क नही है। इसलिए ज्ञानी सदैव दूसरों को देते ही रहते हैँ और अज्ञानी सामने वाले से लेते ही रहते हैँ । योगियों का कहना है कि बिना ऋण चुकाए आप कभी भी सिद्धि प्राप्त नही कर सकते । सेवा आपके ऋण को कम करती है और आपके मन को शुद्ध करती है।
योगी इसे 'चित्तशुद्धि' कहते हैँ और इससे आप एक गहन ध्यान की अवस्था को प्राप्त करते हैँ। जब आप दूसरों की सेवा करते हैँ तो आपको अपने आप मे आनंद मिलता है। यही इस ब्रह्माण्ड का नियम है।

अविष्कार, शोध, अध्यात्म और चमत्कार की भूमि

सटीकता

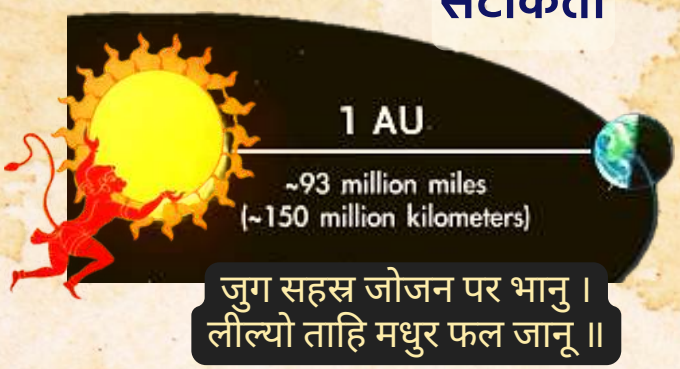

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

यथार्थता

विज्ञान

अंक शास्त्र

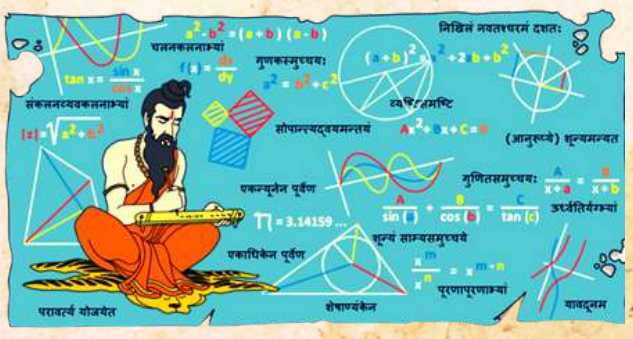

वैभवशाली

शास्त्र

THE HIMALAYAN MEDITATION

हिमालय ध्यान द्वारा सेवा

मंदिर सेवा

- स्वयं सेवक, मानवता के कल्याण के लिए **'हनुमान हृदय मालिका'** और अन्य कई **'शक्तिशाली अष्टकम्'** जैसी स्तुतियों को आसपास के मंदिरों मे लगाते हैँ।
- अब तक हिंदी, गुजराती, बंगाली, कन्नड, मल्याळम आदि भाषाओँ मे 300 से अधिक 'अष्टकम्' के बोर्ड भारत और अन्य देशों में लगाए जा चुके हैँ।
- आप भी अपने नजदीकी मंदिरों मे बोर्ड लगाने के लिये और सेवा से जुड़ने के लिए संपर्क करेँ - **ऋषिवाचिका: +917304035652**

हनुमान हृदय मालिका, USA

यज्ञ सेवा

- हिमालय के ऋषियोँ द्वारा त्यौहार एवम् प्रत्येक पूर्णिमा को परमात्मा, देवता तथा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु यज्ञ किये जाते हैँ।
- यज्ञ से घर के सब क्लेश दूर होते हैँ, समृद्धि और खुशहाली आती है, आपके यां आपके परिवार के सदस्यों के नाम से भी यज्ञ मे आहुति दी जा सकती है।
- कृपया जिन जिन के नाम से यज्ञ करवाना हो उनके नाम और गोत्र लिख कर भेजिए।
- आप अपनी इच्छा अनुसार इस यज्ञ मे भी अपना योगदान दे सकते हैँ।
  UPI ID: **Thehimalayanseva@sbi**
- संपूर्ण जानकारी के लिए संपर्क करेँ -**ऋषिवाचिका : +919920205503**

यज्ञ सेवा

भगवत् गीता सेवा

- हम **'भगवत् गीता'** का 180 से अधिक भाषाओं मे अनुवाद कर रहे हैँ।
- हम साधकों के लिए गीता जी का उच्चारण भी सिखाते हैँ।
- अपनी प्रगति के लिए भगवत् गीता सेवा के इस नेक कार्य मे जुडिये।
- अधिक जानकारी के लिए संपर्क करेँ- **ऋषिवाचक: +919811410363**

भगवत् गीता सेवा

वैदिक अनुसंधान

- ऋषि / योग दर्शन, योगिक भोजन और जीवन शैली, प्राचीन मंदिरों की वास्तुकला, भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाजोँ और परम्पराओं पर शोध करने के लिए हमसे जुड़िये।
- अधिक जानकारी के लिए संपर्क करेँ - **ऋषिवाचिका: +917410106391**

वैदिक अनुसंधान

। दं नम ऋषिभ्य: पूर्वेभ्य: पूर्वजेभ्य: पथिकृद्भ्य: ।

'We offer our obeisance to the Rishis, who came earlier as our ancestors to show us the path of truth'

हम उन ऋषियों को नमन करते है,
जिन्होंने हमारे पूर्वजों के रूप में आकर हमे सत्य का मार्ग दिखाया ।

जनवरी 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शु. दशमी १ पौष 07:12 17:48	शु. पुत्रदा एकदशी २ 06:16 17:04	शु. द्वादशी 3 06:16 17:04	शु. त्रयोदशी ४ प्रदोश व्रत 06:17 17:05	शु. चतुर्दशी ५ 06:17 17:06	शु. पुर्णिमा ६ पौष पुर्णिमा व्रत 06:17 17:06	कृ. प्रतिपदा ७ माघ 06:17 17:06
कृ. प्रतिपदा ८ 06:18 17:08	कृ. द्वितिया ९ 06:18 17:08	कृ. तृतीया १० संकष्टी चतुर्थी 06:18 17:09	कृ. चतुर्थी ११ 06:18 17:10	कृ. पंचमी १२ स्वामी विवेकानंद जयंती 06:18 17:10	कृ. षष्ठी १३ 06:18 17:11	कृ. सप्तमी १४ लोहड़ी 06:18 17:12
कृ. अष्टमी १५ पोंगल उत्तरायण, मकर संक्रांति 06:18 17:12	कृ. नवमी १६ 06:18 17:13	कृ. दशमी १७ 06:18 17:14	कृ. षटतिला एकदशी १८ 06:18 17:14	कृ. द्वादशी १९ प्रदोश व्रत 06:18 17:15	कृ. त्रयोदशी २० मासिक शिवरात्रि 06:18 17:16	कृ. अमावस्या २१ माघ अमावस्या 06:18 17:17
शु. प्रतिपदा २२ 06:18 17:17	शु. द्वितीया २३ 06:18 17:18	शु. तृतीया २४ 06:17 17:19	शु. चतुर्थी २५ 06:18 17:19	शु. पंचमी २६ वसंत पंचमी सरस्वती पूजा प्रजासत्ताक दिन 06:18 17:20	शु. षष्ठी २७ 06:17 17:21	शु. सप्तमी २८ रथ सप्तमी 06:16 17:21
शु. अष्टमी २९ भीष्म अष्टमी 06:16 17:22	शु. नवमी ३० 06:16 17:23	शु. दशमी ३१ 06:16 17:23				

'इस ब्रह्माण्ड में कुछ भी निशुल्क नही है'

सटीकता

• प्रकाश की गति

"तथा च स्मर्यते योजनानां सहस्त्रं द्वे द्वे शते द्वे च योजने एकेन निमिषार्धे- न क्रममाण नमोऽस्तुते- ॥" **(ऋग्वेद 1.50.04)**

ऋग्वेद मे दिए गए एक वर्णन में महर्षि सायणाचार्य कहते हैँ,
हे सूर्यदेव आप **आधे निमेष में 2,202 योजन** पार करते हैँ ।

एक **योजन** अर्थशास्त्र (और महाभारत आदिपर्व) में लगभग **9 मील** की दूरी है।

पुराणों में परिभाषित समय के माप:
1 दिन-रात = 30 मुहूर्त = 24 घंटे
1 मुहूर्त = 30 काल = 24/30 घंटे
1 काल = 30 कस्थ = 24/900 घंटे = 1.6 मिनट
1 कस्थ = 15 निमेष = (1.6/15) मिनट = 3.2 सेकंड
1 निमेष = 3.2/15 = 0.21333 ... सेकंड

इसलिए यदि आप **एक निमेश 0.21333 सेकंड** को ध्यान मे रख कर प्रकाश की गति को निर्धारित करते हैं तो,
(2202 x 9 मील)/(0.21333/2 सेकंड) = 185793.75 मील/सेकंड आता है जो कि प्रकाश की वर्तमान गति के **(186282.397 मील प्रति सेकंड)** के समान है।

• सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ -Hanuman Chalisa

1 जुग = 12000 वर्ष
1 सहस्त्र = 1000
1 योजन = 9 मील
1 मील = 1.6 कि.मी.

जुग x सहस्त्र x योजन = प्रति भानु
12000 X 1000 x 8 = 108,000,000 मील
96, 00, 0000 मील x 1.6 कि.मी. = **172,800,000 कि.मी. सूर्य और पृथ्वी** के बीच की दूरी है।

नासा के अनुसार सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी **149,600,000 कि.मी. है जो लगभग समान ही है।**

। पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः ।

'May the man protect the other in all aspects'

मनुष्य सभी पहलुओं से मनुष्य की रक्षा करे।

फ़रवरी 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			शु. जया एकादशी १ 06:15 17:24	शु. द्वादशी २ प्रदोष व्रत 06:15 17:25	शु. त्रयोदशी 3 06:14 17:25	शु. चतुर्दशी ४ 06:14 17:26
शु. पुर्णिमा ५ माघ पुर्णिमा व्रत 06:14 17:27	कृ. प्रतिपदा ६ फाल्गुन 06:13 17:27	कृ. द्वितिया ७ 06:13 17:28	कृ. तृतीया ८ 06:12 17:28	कृ. चतुर्थी ९ संकष्टी चतुर्थी 06:12 17:29	कृ. पंचमी १० 06:11 17:30	कृ. षष्ठी ११ 06:10 17:30
कृ. सप्तमी १२ 06:10 17:31	कृ. अष्टमी १३ कुम्भ संक्रंति 06:09 17:31	कृ. नवमी १४ 06:09 17:32	कृ. दशमी १५ 06:08 17:32	कृ. विजया एकादशी १६ 06:07 17:33	कृ. द्वादशी १७ प्रदोष व्रत 06:07 17:34	कृ. त्रयोदशी १८ महाशिवरात्रि 06:06 17:34
कृ. चतुर्दशी १९ छत्रपति शिवाजि जयंती 06:05 17:35	कृ. अमावस्या २० फाल्गुन अमावस्या 06:05 17:35	शु. प्रतिपदा द्वितिया २१ 06:04 17:36	शु. तृतीया २२ 06:03 17:36	शु. चतुर्थी २३ 06:02 17:37	शु. पंचमी २४ 06:02 17:37	शु. षष्ठी २५ 06:01 17:38
शु. सप्तमी २६ 06:00 17:38	शु. अष्टमी २७ 05:59 17:38	शु. नवमी २८ 05:59 17:39				

'प्रत्येक कर्म का फल अचूक है '

THE HIMALAYAN MEDITATION

सटीकता

- **चंद्रमा का प्रकाश**

अत्राह गारमन्वत नाम त्वष्टुर पीच्यम ।
इत्था चन्दमसा गृह ॥ (ऋग्वेद 1.84.15)
चंद्रमा को हमेशा सूर्य से ही प्रकाश की किरणें प्राप्त होती हैं।

- **ग्रहण**

यत्वा सूर्य स्वभानु स्तमसाविध्यदासुरः ।
आत्रविद्यथा मुग्धा भुवनान्यदीधयुः ।। (ऋग्वेद 5.40.5)
हे सूर्य देव! जब आप उसी के द्वारा अवरुद्ध हो जाते हैँ जिसे आपने अपना प्रकाश (चंद्रमा) उपहार मे दिया है तो पृथ्वी अचानक अंधेरे मे डूब जाती है।

जब सारी दुनिया यह सोचकर भयभीत थी कि ग्रहण किसी प्रकार के काले जादू के कारण होता है, तब ऋषियोँ ने इसके पीछे के विज्ञान को समझाया।

- **गुरुत्वाकर्षण बल**

हिरण्यपाणि: सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ।। (ऋग्वेद 1.35.9)
सूर्य अपनी कक्षा में गति करता है लेकिन पृथ्वी और अन्य आकाशीय पिण्डों को इस प्रकार धारण करता है कि वे सूर्य के आकर्षण बल द्वारा एक दूसरे से न टकराएं।

- **सूर्य और अन्य ग्रहों के बीच केन्द्राभिमुख बल**

सविता यंत्र: पृथिवीमरम्णादस्कम्भन सविता द्यामदृंहत ।
अश्वमिवाधुक्षुनिमन्तरिमतूत बद्धं सविता समुदम ।। (ऋग्वेद 10.149.1)
सूर्य ने पृथ्वी और अन्य ग्रहों को अपने आकर्षण के माध्यम से बांधा है और उन्हें अपने चारों ओर ऐसे घुमाता है जैसे कोई प्रशिक्षक नए प्रशिक्षित घोड़ों को उनकी बागडोर पकड़कर अपने चारों ओर दौड़ाता है।

- **वेदों में टेलीग्राफी**

आवां रथं पुरुमायं मनाजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवस हुव ।
सहस्त्रकतुं वमिनं शतद्वसुं श्रुष्टीवानं वरिवा धामभि पयः ।। (ऋग्वेद 1.119.10)
बाइपोलर फोर्स (Aswins) की मदद से आपको बिजली के अच्छे कंडक्टर से बने टेलीग्राफिक उपकरण का इस्तेमाल करना चाहिए। कुशल सैन्य अभियानों के लिए यह आवश्यक है लेकिन सावधानी के साथ इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

आश्चर्यजनक रूप से आज के आधुनिक विज्ञान सिद्धांत, अवधारणाएँ और मूल्य, हज़ारों साल पहले लिखे गए वेदों में पहले से वर्णित आविष्कारों के साथ समानता रखते हैं जैसे कि **पाई का मान, पृथ्वी का आकार, पृथ्वी की परिधि, वर्ष की अनुमानित लंबाई इत्यादि... और ये सूची बढ़ी है।**

। धर्मं चर। धर्मान्न प्रमदितव्यम् ।

'Follow the path of righteousness (Dharma) and do not go away from it'

धर्म का आचरण करना चाहिए। धर्म का रास्ता कभी नहीं भूलना चाहिए।

मार्च 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			शु. दशमी १ 05:58 17:39	शु. दशमी २ 05:57 17:40	शु. अमलकी एकादशी 3 05:56 17:40	शु. द्वादशी ४ प्रदोष व्रत 05:54 17:41
शु. त्रयोदशी ५ 05:54 17:41	शु. चतुर्दशी ६ 05:54 17:42	शु. पुर्णिमा ७ फाल्गुन पुर्णिमा व्रत होलिका दहन 05:53 17:38	कृ. प्रतिपदा ८ चैत्र होलि 05:52 17:42	कृ. द्वितिया ९ 05:51 17:43	कृ. तृतीया १० 05:50 17:43	कृ. चतुर्थी ११ संकष्टी चतुर्थी 05:49 17:44
कृ. पंचमी १२ 05:48 17:44	कृ. षष्ठी १३ 05:47 17:44	कृ. सप्तमी १४ 05:46 17:45	कृ. अष्टमी १५ मीन संक्रंति बसोडा 05:45 17:45	कृ. नवमी १६ 05:44 17:45	कृ. दशमी १७ 05:43 17:46	कृ. पापमोचनी एकादशी १८ 05:43 17:46
कृ. द्वादशी १९ प्रदोष व्रत 05:42 17:47	कृ. त्रयोदशी २० मासिक शिवरात्रि 05:41 17:47	कृ. अमावस्या २१ चैत्र अमावस्या 05:39 17:48	शु. प्रतिपदा २२ चैत्र नवरत्र घट स्थापना गुडी पाडवा उगाडी 05:39 17:48	शु. द्वितिया २३ चेटि चंड 05:38 17:48	शु. तृतीया २४ ग़ौरी पूजा 05:37 17:48	शु. चतुर्थी २५ 05:36 17:49
शु. पंचमी २६ 05:35 17:49	शु. षष्ठी २७ यमुना छट 05:34 17:49	शु. सप्तमी २८ 05:33 17:50	शु. अष्टमी २९ 05:32 17:50	शु. नवमी ३० राम नवमी 05:31 17:50	शु. दशमी ३१ चैत्र नवरात्रि प्रारन 05:29 17:51	

'ध्यान सुलाने के लिये नही, जगाने के लिये है'

अंक शास्त्र

• महर्षि बौधायन

महर्षि बौधायन एक भारतीय गणितज्ञ थे।
पाई (pi) को इसका आधिकारिक नाम दिए जाने से पहले और इसका पाइथागोरस प्रमेय मे उपयोग करने से भी पुर्व, महर्षि बौधायन ने अपनी पुस्तक **'बौधायन शुल्बसूत्र'** में इसका उल्लेख किया था।

शुल्बसूत्र में यज्ञ की वेदियों के निर्माण के लिए विभिन्न गणितिक विधियों का उल्लेख किया गया है। इसमें ज्यामिति के बारे में बहुमूल्य जानकारी है।

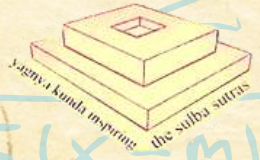

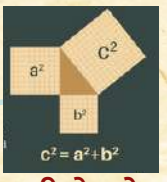

"दीर्घचतुरश्रस्याक्ष्णया रज्जुः पार्श्वमानी तिर्यग् मानी च यत् पृथग् भूते कुरूतस्तदुभयं करोति ॥

बौधायन प्रमेय में, विकर्ण की लंबाई के साथ खींची गई एक रस्सी एक ऐसा क्षेत्र बनाती है जो ऊर्ध्वाधर (लंबे) और क्षैतिज (आड़े) स्थल एक साथ मिलकर बनते हैं।

• महर्षि आर्यभट्ट

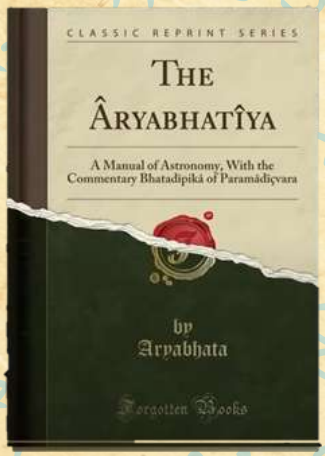

महर्षि आर्यभट्ट महान गणितज्ञ, खगोलशास्त्री, ज्योतिषी और एक भौतिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने **'आर्यभटिया'** नामक ग्रंथ लिखा था जो अग्रिम गणितीय अवधारणाओं का संग्रह है । इस ग्रंथ में दशमलव प्रणाली संख्या, सिद्धांत, ज्यामिति, त्रिकोणमिति, बीजगणित और खगोल विज्ञान का उल्लेख है।

इस ग्रंथ को तीन खंडों में विभाजित किया गया है :-
गणित, **काल-क्रिया** (समय की गणना) और **गोला** (क्षेत्र)

गणित में, आर्यभट्ट ने पहले 10 दशमलव स्थानों के नाम दिये और **दशमलव संख्या प्रणाली** का उपयोग करके वर्ग और घनमूल प्राप्त करने के लिए एल्गोरिदम दिये। फिर उन्होंने ज्यामितीय मापों का समाधान किया जैसे कि $\pi = 3.1416$ मान को निश्चित किया जो वास्तविक मान (3.14159) के बहुत करीब है। इसमे गणितीय श्रृंखला, द्विघात समीकरण, चक्रवृद्धि ब्याज (क्वाड्रटिक इक्वेशन), अनुपात और विभिन्न रैखिक समीकरणों के समाधान, अंकगणित और बीजीय विषयों का वर्णन है ।

काल-क्रिया के साथ साथ उन्होंने खगोल विज्ञान मे भी योगदान दिया - विशेष रूप से **ग्रहण के साथ ग्रहों की गति**, विषयों में समय की विभिन्न इकाइयों की परिभाषा, ग्रहों की गति के उत्केंद्र और एपिसाइक्लिक मॉडल इत्यादि समाविष्ट हैं।

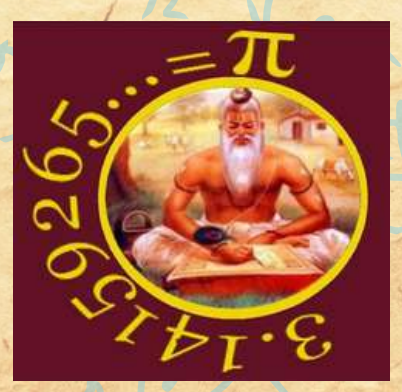

'आर्यभटीया' गोला में गोलाकार खगोल विज्ञान के साथ समाप्त होता है, जहाँ उन्होंने गोलाकार ज्यामिति के लिए समतल त्रिकोणमिति लागू की। विषयों में **सौर और चंद्र ग्रहण** की भविष्यवाणी और एक स्पष्ट व्याख्यान समाविष्ट है कि सितारों की पश्चिम की ओर स्पष्ट गति गोलाकार पृथ्वी के अपनी धुरी के चारों ओर घूमने के कारण है। आर्यभट्ट ने **चंद्रमा और ग्रहों की चमक** को परावर्तित सूर्य के प्रकाश के लिए भी सही प्रकार से बताया।

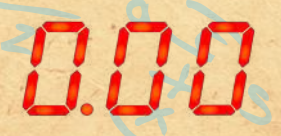

गणित के क्षेत्र में **'शून्य'** का आविष्कार उनका सबसे उल्लेखनीय योगदान था। यह उसे पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की दूरी की गणना करने के लिए प्रेरित करता है।

। उद्यानं ते पुरुष नावयानम् ।

'O Man, always rise up, never fall down'

हे मनुष्य, तुम्हारा सदा उत्थान हो, पतन नहीं।

अप्रैल 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शु. दशमी ३० 05:04 18:02						शु. कामदा एकादशी १ 05:28 17:51
शु. द्वादशी २ 05:27 17:51	शु. द्वादशी 3 प्रदोष व्रत 05:26 17:52	शु. त्रयोदशी ४ 05:25 17:52	शु. चतुर्दशी ५ 05:25 17:53	शु. पुर्णिमा ६ चैत्र पुर्णिमा व्रत हनुमान जयंती 05:24 17:53	कृ. प्रतिपदा ७ वैशाख 05:23 17:53	कृ. द्वितिया ८ 05:22 17:54
कृ. तृतीया कृ. चतुर्थी ९ संकष्टी चतुर्थी 05:21 17:54	कृ. चतुर्थी १० 05:20 17:54	कृ. पंचमी ११ 05:19 17:55	कृ. षष्ठी १२ 05:18 17:55	कृ. सप्तमी कृ. अष्टमी १३ 05:17 17:55	कृ. नवमी १४ मेष संक्रांति सुर्य-नववर्ष 05:17 17:56	कृ. दशमी १५ 05:16 17:56
कृ. वरुथीनी एकादशी १६ 05:15 17:57	शु. द्वादशी १७ प्रदोष व्रत 05:14 17:57	शु. त्रयोदशी १८ मासिक शिवरात्रि 05:13 17:57	शु. चतुर्दशी १९ 05:42 17:57	कृ. अमावस्या २० वैशाख अमावस्या सुर्य-ग्रहण 05:12 17:58	शु. प्रतिपदा २१ 05:12 17:58	शु. द्वितिया २२ अक्षय तृतीया परशुराम जयंती 05:10 17:59
शु. तृतीया २३ 05:09 17:59	शु. चतुर्थी २४ 05:08 18:00	शु. पंचमी २५ 05:08 18:00	शु. षष्ठी २६ 05:07 18:00	शु. सप्तमी २७ गंगा सप्तमी 05:06 18:01	शु. अष्टमी २८ 05:05 18:01	शु. नवमी २९ सीता नवमी 05:05 18:02

'कयी तरह की सीमाओं से बढें'

अंक शास्त्र

• महर्षि ब्रह्मगुप्त

महर्षि ब्रह्मगुप्त एक प्राचीन भारतीय खगोलविद और गणितज्ञ थे, जिनके 'शून्य' के सटीक गुणों की खोज के लिए हमें आभारी होना चाहिए। वे प्राचीन भारतीय **गणितीय खगोल विज्ञान केंद्र** के निर्देशक थे जो कि **उज्जैन की खगोलीय वेधशाला** थी।
उन्होंने खगोल विज्ञान और गणित के बारे में चार पुस्तकें लिखीं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध **'ब्रह्मास्फुट सिद्धांत'** है।

उन्होंने एक **वर्ष की अवधि** 365 दिन 6 घंटे 12 मिनट 9 सेकंड के रूप में बताई। उन्होंने गणना की कि **पृथ्वी की परिधि** लगभग 36,000 किमी (22,500 मील) है। महर्षि ब्रह्मगुप्त ने सकारात्मक और नकारात्मक संख्याओं के साथ काम करने के नियम स्थापित किए।

• महर्षि भास्कराचार्य II

महर्षि भास्कराचार्य द्वितीय एक भारतीय गणितज्ञ और खगोलविद थे, जिन्होंने संख्या प्रणालियों पर **महर्षि ब्रह्मगुप्त** के काम को आगे बढ़ाया। उनके निम्नलिखित छह कार्य प्रसिद्ध हैं।

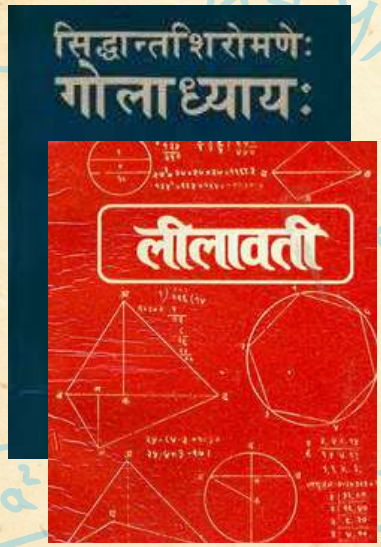

- **लीलावती** - गणित
- **बीजगणित**
- **गणिताध्याय** - गणितीय खगोल विज्ञान
- **गोलाध्याय** - क्षेत्र
- **कर्ण कुतूहल** - खगोलीय चमत्कारों की गणना
- **वासनाभास्य** - सिद्धांत शिरोमणि पर भास्कराचार्य की अपनी टिप्पणी
- **विवरण**- गणितज्ञ और खगोलशास्त्री लल्ला के शिष्यविद्धिदाता तंत्र पर भाष्य

मरुच्लो भूरचला स्वभावतो यतो, विचित्रावतवस्तु शक्त्यः।।
आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत्, खस्थं,गुरुस्वाभिमुखं स्वशक्तत्या।
आकृष्यते तत्पततीव भाति, समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे।
- भुवनकोश-गोलाध्याय, सिध्दांतशिरोमणि।।

अपनी संधियों में **सिद्धांत शिरोमणि** ने ग्रहों की स्थिति, ग्रहण, ब्रह्माण्ड विज्ञान, गणितीय तकनीक और खगोलीय उपकरणों के विषयों पर लिखा। **सूर्य सिद्धांत** में उन्होंने **गुरुत्वाकर्षण बल** पर भी प्रकाश डाला।

ऐसे अन्य और भी महान ऋषि थे जिन्होंने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया था।
महर्षि भद्रबाहु, उमास्वती, यवनेश्वर, वशिष्ठ सिद्धांत, यतिवृषभ वराहमिहिर, यतिवभ, विरहंका, ब्रह्मगुप्त, भास्कर I, श्रीधर, वीरसेन, गोविंदस्वामी, पृथुदक, शंकरनारायण, जयदेव, महावीरब्रह्मदेव, पावुलुरी मल्लाना, हेमचंद्र, भास्कर II, सोमेश्वर III और कई अन्य ..

प्राचीन ऋषियों द्वारा विश्व को दिया गया गणितीय योगदान

शून्य, बीजगणित, त्रिकोणमिति, दशमलव प्रणाली और द्विघात सूत्र, फाइबोनैचि संख्याएं, लंबाई, वजन, ज्यामिति, अनंत श्रृंखला, बाइनरी कोड, चक्रवाला एल्गोरिदम की विधि, एन्कोडिंग इत्यादि।

। माता भूमिः पुत्रो-अहम् पृथ्वीयाः ।

'Earth is my mother and I am her son'

भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

मई 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	शु. मोहिनी एकादशी १ 05:03 18:03	शु. द्वादशी २ 05:03 18:03	शु. त्रयोदशी ३ प्रदोष व्रत 05:02 18:03	शु. चतुर्दशी ४ नृसिंह जयंती 05:02 18:04	शु. पुर्णिमा ५ वैशाख पुर्णिमा व्रत कुर्म जयंती बुद्ध पुर्णिमा चंद्र ग्रहण 05:01 18:04	कृ. प्रतिपदा ६ जेष्ठ नारद जयंती 05:00 18:05
कृ. द्वितिया ७ 05:00 18:05	कृ. तृतीया ८ कृ. चतुर्थी संकष्टी चतुर्थी 04:59 18:06	कृ. चतुर्थी ९ 04:59 18:06	कृ. पंचमी १० 04:58 18:07	कृ. षष्ठी ११ 04:58 18:07	कृ. सप्तमी १२ 04:57 18:07	कृ. अष्टमी १३ कृ. नवमी 04:57 18:08
कृ. दशमी १४ हनुमान जयंती दक्षिण 04:56 18:08	कृ. अपारा एकादशी १५ वृषभ संक्रांति 04:56 18:09	कृ. द्वादशी १६ 04:55 18:09	कृ. त्रयोदशी १७ प्रदोष व्रत मासिक शिवरात्रि 04:55 18:10	कृ. चतुर्दशी १८ 04:55 18:10	कृ. अमावस्या १९ जेष्ठ अमावस्या वट सावित्री व्रत शनि जयंती 04:54 18:11	शु. प्रतिपदा २० 04:54 18:11
शु. द्वितिया २१ 04:54 18:12	शु. तृतीया २२ महाराणा प्रताप जयंति 04:53 18:12	शु. चतुर्थी २३ 04:53 18:12	शु. पंचमी २४ 04:53 18:13	शु. षष्ठी २५ 04:52 18:13	शु. सप्तमी २६ 04:52 18:14	कृ. नवमी २७ 04:52 18:14
शु. अष्टमी २८ 04:52 18:15	शु. नवमी २९ 04:52 18:15	शु. दशमी ३० गंगा दसेरा 04:51 18:16	शु. निर्जला एकादशी ३१ 04:51 18:16			

'जब आप कुछ भी नहीं चाहते हैं, तो ब्रह्मांड आपको सब कुछ देता है'

विज्ञान

• आचार्य सुश्रुत

भारतीय चिकित्सा के जनक
कॉस्मेटिक सर्जरी के जनक

ऋषि सुश्रुत द्वारा लिखित **सुश्रुत संहिता**, दुनिया में ज्ञात सबसे प्रारंभिक चिकित्सा विश्वकोश है जिसमें **184 अध्याय, 1,120 बीमारियों के कारण, 700 औषधीय पौधों, 64 खनिज विधियाँ** और **57 पशु स्रोतों कि विधियाँ** हैं। आप किसी एक बीमारी का नाम लें और उस पर अध्याय उपलब्ध मिलेगा।
इसमें **तीन प्रकार के स्किन ग्राफ्ट** और **पुनर्निर्माण सहित कई सर्जिकल प्रक्रियाओं को करने के निर्देश भी हैं**।

• महर्षि कणाद

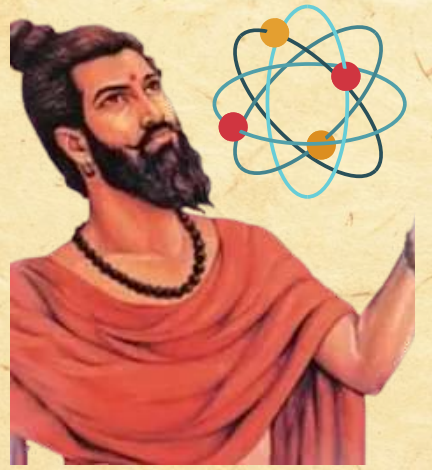

महर्षि कणाद एक प्राचीन भारतीय ऋषि, वैज्ञानिक और दार्शनिक थे, जिन्होने **ब्रह्माण्ड के निर्माण और अस्तित्व** की व्याख्या करने के लिए पदार्थ के **परमाणु सिद्धांत** का प्रतिपादन किया।
महर्षि कणाद ने ही सबसे पहले इस विचार की अवधारणा बतायी कि 'पदार्थ में अविभाज्य इकाइयाँ होती हैं जिन्हें आगे छोटे कणों में विभाजित नहीं किया जा सकता'। सबसे छोटा कण, यानी परमाणु पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इसे नष्ट नहीं किया जा सकता और ये सभी परिस्थितियों में अपने मूल स्वरूप मे कायम रहता है।
महर्षि कणाद ने अपनी पुस्तक '**वैशेषिक सूत्र**' में अपने स्पष्टीकरण को '**कणाद सूत्र**' भी कहा है।
यह पुस्तक विज्ञान, दर्शन और धर्म का मिश्रण है।

कुछ प्रमुख प्राचीन वैज्ञानिक आविष्कार

- दंत चिकित्सा
- आयुर्वेद
- प्राचीन फ्लश शौचालय प्रणाली
- क्रूसिबल स्टील
- मोतियाबिंदु सर्जरी
- वूट्ज़ स्टील
- जस्ता शुद्धिकरण
- प्लास्टिक सर्जरी
- सिविल इंजीनियरिंग और वास्तुकला
- उत्पादन तकनीक
- जहाज निर्माण और नेविगेशन

। विप्रा ऋतस्य वाहसा ।

'The wise is propagator of the truth'

ज्ञानी सत्य के प्रचारक होते हैं।

जून 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				शु. द्वादशी १ प्रदोष व्रत 04:51 18:16	शु. त्रयोदशी २ 04:51 18:17	शु. चतुर्दशी 3 वट पुर्णिमा व्रत 04:51 18:17
शु. पुर्णिमा ४ जेष्ठ पुर्णिमा व्रत 04:51 18:18	कृ. प्रतिपदा ५ कृ. द्वितिया आषाढ़ 04:51 18:18	कृ. तृतीया ६ कृ. चतुर्थी 04:51 18:18	कृ. चतुर्थी ७ 04:51 18:19	कृ. पंचमी ८ 04:51 18:19	कृ. षष्ठी ९ 04:51 18:20	कृ. सप्तमी १० 04:51 18:20
कृ. अष्टमी ११ कृ. नवमी 04:51 18:20	कृ. दशमी १२ 04:51 18:21	कृ. दशमी १३ 04:51 18:21	कृ. योगिनी एकादशी १४ 04:51 18:21	कृ. द्वादशी १५ प्रदोष व्रत मिथुन संक्राति 04:51 18:22	कृ. त्रयोदशी १६ मासिक शिवरात्री 04:52 18:22	कृ. चतुर्दशी १७ 04:52 18:22
कृ. अमावस्या १८ 04:52 18:22	शु. प्रतिपदा १९ 04:52 18:23	शु. द्वितिया २० पुरी जगन्नाथ रथ यात्रा 04:52 18:23	शु. तृतीया २१ योग दिवस 04:53 18:23	शु. चतुर्थी २२ 04:53 18:23	शु. पंचमी २३ 04:53 18:24	शु. षष्ठी २४ 04:53 18:24
शु. सप्तमी २५ 04:54 18:24	शु. अष्टमी २६ 04:54 18:24	शु. नवमी २७ 04:54 18:24	शु. दशमी २८ 04:54 18:24	शु. देवशानी एकादशी २९ शु. आषाढ़ी एकादशी 04:55 18:24	शु. द्वादशी ३० 04:55 18:25	

'शून्य से अनंत तक की यात्रा शुरू करें'

THE HIMALAYAN MEDITATION

यथार्थता

प्रतिष्ठित **'स्टोन रथ'**। यह भव्य रथ विट्ठल मंदिर परिसर, हम्पी के अंदर है।

महाराष्ट्र के कोपेश्वर मंदिर का यह **'स्वर्ग मंडप'** चंद्रमा की दशा और दिशाओं को ध्यान में रखकर बनावाया गया है। वर्ष में एक बार **'कार्तिक पूर्णिमा'** के दिन चंद्रमा मंडप के बिल्कुल मध्य में दिखाई देता है।

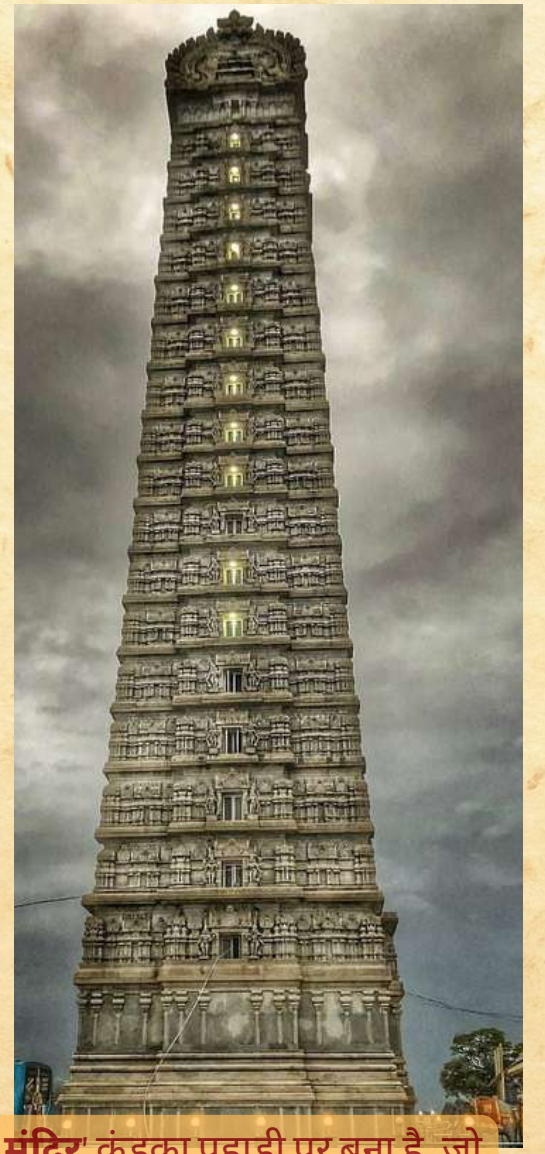

'मुरुडेश्वर मंदिर' कंदुका पहाड़ी पर बना है, जो कि तीनों दिशाओं से अरब सागर से घिरा हुआ है। मंदिर पर **20 मंजिला गोपुर** का निर्माण किया गया है। यह **249 फीट लंबा** है, जिसे **'दुनिया का सबसे ऊंचा गोपुर'** माना जाता है।

तमिलनाडु मे तंजावुर का **'बृहदीश्वर मंदिर'** 1000 साल से, 6 बड़े भूकंप के झटकों के बाद भी **शून्य डिग्री झुकाव** के साथ मजबूती से टिका है।

। न कालमतिवर्तन्ते महान्तः स्वेषु कर्मसु ।

'Great people never delay their duties'

महापुरुष अपने कर्तव्य करने में विलम्ब नहीं करते हैं।

जुलाई 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शु. द्वादशी ३० प्रदोष व्रत 05:07 18:18	शु. त्रयोदशी ३१ शु. चतुर्दशी 05:07 18:18					शु. त्रयोदशी १ प्रदोष व्रत 04:55 18:25
शु. चतुर्दशी २ 04:56 18:25	शु. पुर्णिमा ३ आषाढ़ पुर्णिमा गुरु पुर्णिमा 04:56 18:25	कृ. प्रतिपदा ४ श्रावन 04:56 18:25	कृ. द्वितिया ५ 04:57 18:25	कृ. तृतीया ६ कृ. चतुर्थी 04:57 18:25	कृ. चतुर्थी ७ कृ. पंचमी 04:57 18:25	कृ. षष्ठी ८ 04:58 18:25
कृ. सप्तमी ९ 04:58 18:24	कृ. अष्टमी १० 04:59 18:24	कृ. नवमी ११ 04:59 18:24	कृ. दशमी १२ 04:59 18:24	कृ. कामिका एकादशी १३ 05:00 18:24	कृ. द्वादशी १४ प्रदोष व्रत 0500 18:24	कृ. त्रयोदशी १५ 05:01 18:24
कृ. चतुर्दशी १६ कर्क संक्रंति 05:01 18:23	कृ. अमावस्या १७ श्रावण अमावस्या 05:02 18:23	शु. प्रतिपदा १८ 05:02 18:23	शु. द्वितिया १९ 05:02 18:23	शु. तृतीया २० 05:03 18:22	शु. तृतीया २१ 05:03 18:22	शु. चतुर्थी २२ 05:04 18:22
शु. पंचमी २३ 05:04 18:21	शु. षष्ठी २४ 05:04 18:21	शु. सप्तमी २५ 05:05 18:20	शु. अष्टमी २६ 05:05 18:20	शु. नवमी २७ 05:06 18:20	शु. दशमी २८ 05:06 18:19	शु. पद्मिनी एकादशी २९ 05:07 18:19

'जो चाबी दरवाजे को बंद करती है, वही उसे खोल सकती है'

यथार्थता

देखिए कैसे मूर्तिकार ने **पत्थर मे आधे मुड़े** हुए पैर को दर्शाया और सूक्ष्मता से **रक्तधमनि** को रेखांकित किया है।
होयसालेश्वर मंदिर, हलेबिदु, कर्नाटक

प्राचीन तकनीक जो आपको अचंभित कर देती है ।
देखिये लगभग **400 मिमी लंबे ग्रेनाइट में 0.5 मिमी ड्रिलिंग छेद आरपार कान से निकलता है**।
आप सोचिए कि हज़ारों साल पहले किस तकनीक का इतनी सटिकता और निपुणता से प्रयोग किया होगा ।

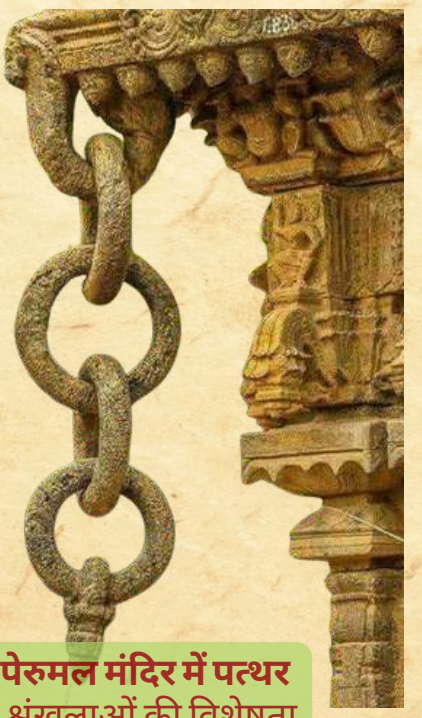

कांचीपुरम वरदराज **पेरुमल मंदिर में पत्थर की श्रंखलाएं हैँ**। इन श्रृंखलाओं की विशेषता यह है कि ये एक ही पत्थर से बिना किसी जोड़ के बनाई गई हैँ ।

बेलूर, कर्नाटक के एक मंदिर में भयानक **'उग्र नरसिम्ह'** को हिरण्यकश्यप का वध करते हुए रेखांकित किया है।
"पत्थर पर बडी जटिलता से **बाहर लटकी हुई आंत** को दर्शाया गया है। इससे पता चलता है कि मुर्तिकार ने कितनी सूक्ष्मता से **शारीरिक संरचना का विवरण** किया है।

हमारे पूर्वजों द्वारा निर्मित मंदिर **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** के स्थान हैँ । यह मंदिर अनंत, अकल्पनीय, अविश्वसनीय पत्थर की कहानियाँ और चमत्कारीक संरचनाएं हैँ । हम सारे भारतवासिओं से आग्रह करते हैँ कि आप अपने बच्चों के साथ अपने प्राचीन मंदिरों के नियमित रुप से दर्शन करेँ ।

। स्वस्मै स्वल्पं समाजाय सर्वस्वं ।

'Think little for yourself and more and more for the mankind'

स्वयम् से उपर उठके मानव कल्याण को अपना लक्ष्य बनाओ।

अगस्त 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		१ शु. पुर्णिमा श्रावण अधिक पुर्णिमा व्रत 05:08 18:17	२ कृ. प्रतिपदा 05:08 18:17	3 कृ. द्वितिया 05:09 18:16	४ कृ. तृतीया संकष्टी चतुर्थी 05:09 18:15	५ कृ. चतुर्थी 05:09 18:15
६ कृ. पंचमी 05:10 18:14	७ कृ. षष्ठी कृ. सप्तमी 05:10 18:14	८ कृ. अष्टमी 05:11 18:13	९ कृ. नवमी 05:11 18:12	१० कृ. दशमी 05:11 18:12	११ कृ. दशमी 05:12 18:11	१२ कृ. परमा एकादशी 05:12 18:10
१३ कृ. द्वादशी प्रदोष व्रत 05:13 18:10	१४ कृ. त्रयोदशी मासिक शिवरात्री 05:13 18:09	१५ कृ. चतुर्थी गणतंत्र दिवस 05:13 18:08	१६ कृ. अमावस्या अमावस्या 05:14 18:07	१७ शु. प्रतिपदा सिन्ह संक्रांति 05:14 18:07	१८ शु. द्वितिया 05:14 18:06	१९ शु. तृतीया हरियाली तीज 05:15 18:05
२० शु. चतुर्थी 05:15 18:04	२१ शु. पंचमी नाग पंचमी 05:15 18:03	२२ शु. षष्ठी 05:16 18:02	२३ शु. सप्तमी 05:16 18:02	२४ शु. अष्टमी 05:16 18:01	२५ शु. नवमी वर-लक्ष्मी व्रत 05:17 18:00	२६ शु. दशमी 05:17 17:59
२७ पवित्रोपना एकादशी 05:17 17:58	२८ शु. द्वादशी प्रदोष व्रत 05:18 17:57	२९ शु. त्रयोदशी ओणम/ थिरुवोनम 05:18 17:56	३० शु. चतुर्दशी रक्षा बंधन 05:18 17:55	३१ शु. पुर्णिमा श्रावण पुर्णिमा व्रत बलराम जयंति 05:19 17:54		

'ब्रह्माण्ड सभी के साथ समान व्यवहार करता है'

वैदिक भारतीय शास्त्र

Shruti's (श्रुति)

That which was heard

4 वेद

- Rigveda ऋग्वेद
- Yajurveda यजुर्वेद
- Samveda सामवेद
- Atharvaveda अथर्ववेद

वेदों के खंड

वेदांग
- व्याकरण
- ज्योतिष
- निरुक्त
- शिक्षा
- चंदा
- कल्पसूत्र

उपवेद
- अर्थवेद
- धनुर्वेद
- गंधर्ववेद
- आयुर्वेद

- संहिता
- ब्रह्म
- अरण्यक

Smriti's (स्मृति)

That which is remembered

- 18 पुराण भागवतम्
- धर्म शास्त्र
- तंत्र
- इतिहास
  - रामायण
  - महाभारत
- श्रीमद् भगवद्गीता

लेखन
- आचार्यों का लेखन
- जगद गुरु के लेखन

लेखन
- रसिक
- भक्ति
- साधूसंत

| शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर |

'Earn by hundred hands and distribute by thousand hands'

सौ हाथ से कमाओ और हज़ार हाथों से दान करो।

सितम्बर 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
					१ कृ. प्रतिपदा कृ. द्वितिया भाद्रपद 05:19 17:54	२ कृ. तृतीया कजारी तीज 05:19 17:53
3 कृ. चतुर्थी संकष्टी चतुर्थी 05:19 17:52	४ कृ. पंचमी 05:20 17:51	५ कृ. षष्ठी शिक्षक दिवस 05:20 17:50	६ कृ. सप्तमी 05:20 17:49	७ कृ. अष्टमी श्री कृष्ण जन्माष्टमी 05:20 17:48	८ कृ. नवमी 05:21 17:47	९ कृ. दशमी 05:21 17:46
१० कृ. परमा एकादशी 05:21 17:45	११ कृ. द्वादशी 05:22 17:44	१२ कृ. त्रयोदशी प्रदोष व्रत 05:22 17:43	१३ कृ. चतुर्थी मासिक शिवरात्री 05:22 17:42	१४ कृ. अमावस्या भाद्रपद अमावस्या 05:23 17:41	१५ कृ. अमावस्या 05:23 17:40	१६ शु. प्रतिपदा 05:23 17:39
१७ शु. द्वितिया कन्या संक्राति विश्वकर्मा पूजा 05:23 17:38	१८ शु. तृतीया हरतालिका तीज 05:24 17:37	१९ शु. चतुर्थी गणेश चतुर्थी 05:24 17:36	२० शु. पंचमी ऋषि पंचमी 05:24 17:35	२१ शु. षष्ठी 05:25 17:34	२२ शु. सप्तमी 05:25 17:33	२३ शु. अष्टमी राधा अष्टमी 05:25 17:32
२४ शु. नवमी 05:25 17:31	२५ शु. दशमी 05:26 17:30	२६ शु. द्वादशी शु. परिवर्तिनी एकादशी वामन जयंती 05:26 17:29	२७ शु. त्रयोदशी प्रदोष व्रत 05:26 17:28	२८ शु. चतुर्दशी अनंत चतुर्दशी 05:27 17:27	२९ शु. पुर्णिमा भाद्रपद पुर्णिमा व्रत पितृपक्ष आरम्भ 05:27 17:26	३० कृ. प्रतिपदा अश्विन 05:27 17:25

'हमारी इच्छाओं की पूर्ती हमारे द्वारा निर्धारित होती है'

ऋषि- 'महान वैज्ञानिक'

ऋषि वे हैं जिन्होंने हमें हमारी विरासत, हमारी संस्कृति और हमारे जीवन जीने की शैली को निर्देषित किया। इसे **सनातन धर्म के रूप में जाना जाता है।**

ऋषि वे **"महान योगी"** होते हैं, जो **गहन ध्यान (तप)** के बाद सर्वोच्च सत्य और शाश्वत ज्ञान को आत्मसात करते हैं, जिसकी उन्होंने वेदों एवम् मंत्रों के रूप मे रचना की है।

ऋषि **उच्च कोटि के वैज्ञानिक** होते हैं। उन्होंने वर्तमान समय के आधुनिक उपकरणों का उपयोग किए बिना **'ब्रह्माण्ड' और 'प्रकृति'** के बारे मे बड़ी मात्रा मे जानकारी उपलब्ध की है।

ऋषि वास्तव में **पहले वैज्ञानिक**, भौतिक वैज्ञानिक, वनस्पतिशास्त्रज्ञ, चिकित्सक (डॉक्टर), अभियंत्रिक (इंजीनियर), सर्जन, वास्तुकार, मूर्तिकार, कलाकार, शिक्षक, उपदेशक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं । वे महान खगोलशास्त्री और ज्योतिषी हैं । उनका ज्ञान न केवल सैद्धांतिक है बल्कि मानव जीवन के हर पहलू पर लागू होता है।

ऋषियोँ ने जो भी ज्ञान एकत्रित किया था, वह अंततः **आध्यात्मिक विज्ञान** के रूप मे जाना जाने लगा, जिसे **सनातन धर्म** कहा जाता है। उन्होंने सनातन धर्म की परंपरा को बनाए रखने के लिए हर युग में बार-बार जन्म लेकर भारत की आध्यात्मिक परम्पराऔर संस्कृति का निरंतर नवीनीकरण सुनिश्चित किया।

ऋषि सबसे उत्कृष्ट भाषा में बात करते हैं जिसे **संस्कृत** कहते हैं । भाषा शास्त्र पर ऋषियोँ का पुर्ण प्रभुत्व है।
एक ऐसे युग में जब लिखित शब्द पूरी तरह से अज्ञात था, ऋषियोँ ने अपनी अद्भुत स्मरणशक्ति से **वेदों के ज्ञान** को अपने शिष्यों को हस्तांतरित किया, जिन्होंने परम्परागत रुप मे आगे, इसे अपनी अगली पीढ़ियों तक पहुंचाया। इसे ही **'गुरु शिष्य परम्परा'** कहा जाता है।

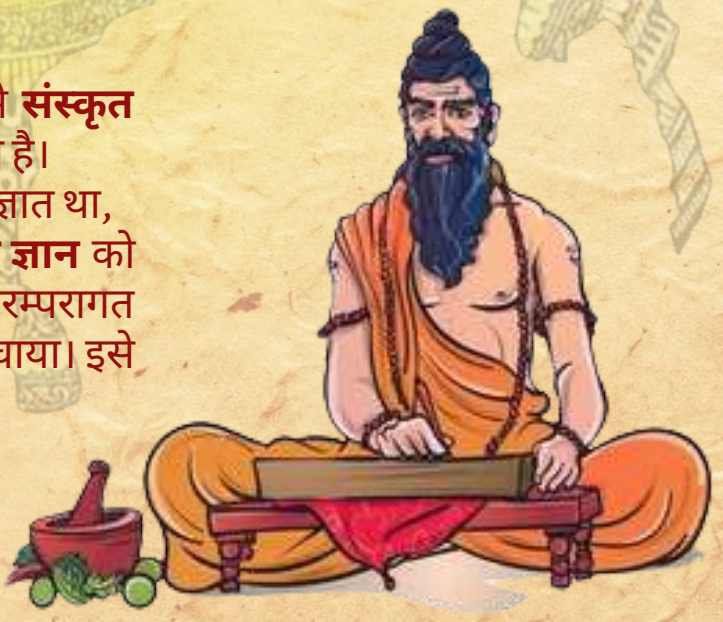

| वीर-भोग्य वसुंधरा |

'The Earth shall be enjoyed by the brave'
वीर योद्धा ही इस वसुन्धरा को भोग करने योग्य हैं।

अक्टूबर 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
कृ. द्वितिया १ 05:28 17:24	कृ. तृतीया २ कृ. चतुर्थी संकष्टी चतुर्थी गांधी जयंती 05:28 17:23	कृ. पंचमी 3 05:28 17:22	कृ. षष्ठी ४ 05:29 17:21	कृ. सप्तमी ५ 05:29 17:20	कृ. सप्तमी ६ 05:29 17:19	कृ. अष्टमी ७ 05:30 17:18
कृ. नवमी ८ 05:30 17:17	कृ. दशमी ९ 05:30 17:16	कृ. इंदिरा एकादशी १० 05:30 17:16	कृ. द्वादशी ११ प्रदोष व्रत 05:31 17:15	कृ. त्रयोदशी १२ मासिक शिवरात्री 05:31 17:14	कृ. चतुर्थी १३ 05:31 17:13	कृ. अमावस्या १४ सर्वपित्रि अश्विन अमावस्या सुर्यग्रहण 05:32 17:12
शु. प्रतिपदा १५ शरद नवरात्री घटस्थापन 05:32 17:11	शु. द्वितिया १६ 05:33 17:10	शु. तृतीया १७ 05:33 17:10	शु. चतुर्थी १८ तुला संक्रांति 05:33 17:09	शु. पंचमी १९ 05:34 17:08	शु. षष्ठी २० कल्पारम्भ सरस्वती अवाहान 05:34 17:07	शु. सप्तमी २१ नव पत्रिका पूजा सरस्वती पूजी 05:35 17:06
शु. अष्टमी २२ दुर्गा महाष्टमी 05:35 17:06	शु. नवमी २३ दुर्गा महानवमी 05:36 17:05	शु. दशमी २४ दुर्गा विसर्जन विजया दशमी 05:36 17:04	शु. पशंकुशा एकादशी २५ 05:37 17:03	शु. द्वादशी २६ प्रदोष व्रत 05:37 17:03	शु. त्रयोदशी २७ शु. चतुर्दशी वाल्मिकी जयंती 05:38 17:02	शु. पुर्णिमा २८ अश्विन शरद पुर्णिमा कोजागिरी 05:38
कृ. प्रतिपदा २९ कार्तिक चंद्र ग्रहण 05:39 17:01	कृ. द्वितिया ३० 05:39 17:00	कृ. तृतीया ३१ 05:40 16:59				

'ऋषियों का कहना है कि इच्छाएं ही बंधन का मुख्य कारण है'

वैदिक साहित्य आधुनिक विज्ञान का जनक कैसे है...

The Subjects taught in Ancient 'Indian Universities'

प्राचीन भारतवर्ष के गुरुकुलों में पढ़ाए जाने वाले विषय

व्यावसायिक और तकनीकी विद्याएँ

१. वाणिज्य
२. फार्मेसी
३. निदान व शल्य चिकित्सा
४. कृषि
५. पशुपालन
६. पक्षिपालन
७. पशु प्रशिक्षण
८. यांत्रिकी
९. वाहन डिजाइनिंग
१०. रत्न
११. आभूषण डिजाइनिंग
१२. कपड़ा
१३. कुंभकारी
१४. धातु विद्या
१५. विष विज्ञान
१६. रंगकारी
१७. सुप्रचालन तंत्र (लॉजिस्टिक्स)
१८. वास्तुकला
१९. पाक कला
२०. वाहन चालन
२१. जल प्रबन्धन
२२. आँकड़ों की प्रविष्टि
२३. उद्यान पालन
२४. वन पालन
२५. पैरामेडिकल
२६. अर्थशास्त्र
२७. तर्कशास्त्र
२८. न्यायशास्त्र
२९. नौकाशास्त्र
३०. रसायन विज्ञान
३१. ब्रह्मांड विज्ञान
३२. चिकित्सा न्यायशास्त्र
३३. शव परीक्षा

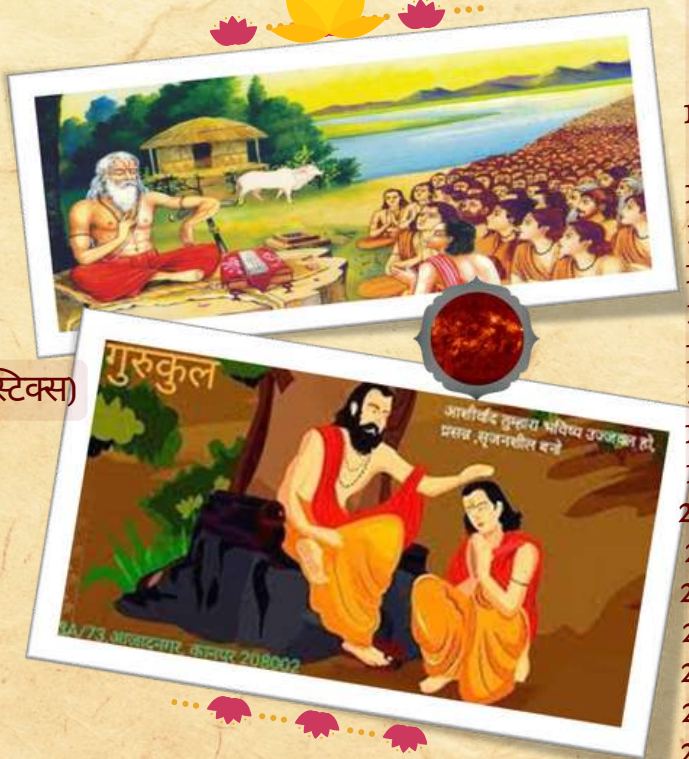

Business and Technical Subjects

1. Commerce
2. Pharmacy
3. Diagnosis and Surgery
4. Agriculture
5. Animal Husbandry
6. Bird Keeping
7. Animal Training
8. Mechanics
9. Vehicle Designing
10. Gems
11. Jewellery Designing
12. Textile
13. Pottery
14. Metallurgy
15. Toxicology
16. Dying
17. Logistics
18. Architecture
19. Cooking
20. Driving
21. Water Management
22. Data Entry
23. Horticulture
24. Forestry
25. Paramedical
26. Economics
27. Logic
28. Law
29. Ship Building
30. Chemical Science
31. Cosmology
32. Medical Jurisprudence
33. Postmortem

THE HIMALAYAN MEDITATION

। प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति ।

'An early riser earns good health'

प्रात:काल उठने वाले अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करते हैं।

नवंबर 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			१ कृ. चतुर्थी संकष्टी चतुर्थी करवा चौथ 05:40 16:59	२ कृ. पंचमी 05:41 16:58	3 कृ. षष्ठी 05:41 16:58	४ कृ. सप्तमी 05:42 16:57
५ कृ. अष्टमी 05:42 16:57	६ कृ. नवमी 05:43 16:56	७ कृ. दशमी 05:43 16:56	८ कृ. दशमी 05:44 16:55	९ कृ. रमा एकादशी गोवत्स्य द्वादश 05:45 16:55	१० कृ. द्वादशी प्रदोष व्रत धनतेरस 05:45 16:54	११ कृ. त्रयोदशी मासिक शिवरात्री काली चौदस 05:46 16:54
१२ कृ. चतुर्थी नरक चतुर्दशी लक्ष्मी पूजा दिवाली 05:46 16:54	१३ कृ. अमावस्या कार्तिक अमावस्या 05:47 16:53	१४ शु. प्रतिपदा गोवर्धन पूजा 05:48 16:53	१५ शु. द्वितिया भाई दूज 05:48 16:53	१६ शु. तृतीया 05:49 16:52	१७ शु. चतुर्थी वृश्चिक संक्रांति 05:50 17:46	१८ शु. पंचमी 05:50 16:52
१९ शु. षष्ठी शु. सप्तमी छट पूजा 05:51 16:52	२० शु. अष्टमी 05:51 16:51	२१ शु. नवमी 05:52 16:51	२२ शु. दशमी कंस वध 05:53 16:51	२३ शु. देव उत्थाना एकादशी 05:53 16:51	२४ शु. द्वादशी प्रदोष व्रत तुलसी विवाह 05:54 16:51	२५ शु. त्रयोदशी 05:55 16:51
२६ शु. चतुर्दशी 05:55 16:51	२७ शु. पुर्णिमा कार्तिक पुर्णिमा व्रत 05:56 16:51	२८ कृ. प्रतिपदा मार्गशिष 05:57 16:51	२९ कृ. द्वितिया 05:57 16:51	३० कृ. तृतीया संकष्टी चतुर्थी 05:58 16:51		

अपने कर्जों को चुकाए बिना, आप साकार नहीं हो सकते .
सेवा आपके ऋण और कर्ज को साफ करती है

THE HIMALAYAN MEDITATION

वैदिक साहित्य आधुनिक विज्ञान का जनक कैसे है...

The Subjects taught in "Ancient Indian Universities"
प्राचीन भारतवर्ष के गुरुकुलों में पढ़ाए जाने वाले विषय

वैज्ञानिक विद्याएँ

१. धातु विद्या
२. विमानन
३. जल विद्या
४. अंतरिक्ष विज्ञान
५. पर्यावरण और पारिस्थितिकी
६. सूर्य विद्या
७. चन्द्र विद्या
८. मौसम पूर्वानुमान
९. पदार्थ विद्युत विद्या
१०. सौर ऊर्जा
११. दिन रात्रि विद्या
१२. अंतरिक्ष अनुसंधान
१३. खगोल विद्या
१४. भूगोल विद्या
१५. काल विद्या
१६. भूविज्ञान और खनन
१७. रत्न विज्ञान व धातु विद्या
१८. गुरुत्वाकर्षण
१९. प्रकाशिकी
२०. संचार विद्या
२१. जलयान विद्या
२२. अग्नेय अस्त्र विद्या
२३. जीवजंतु विज्ञान विद्या
२४. भौतिक विज्ञान

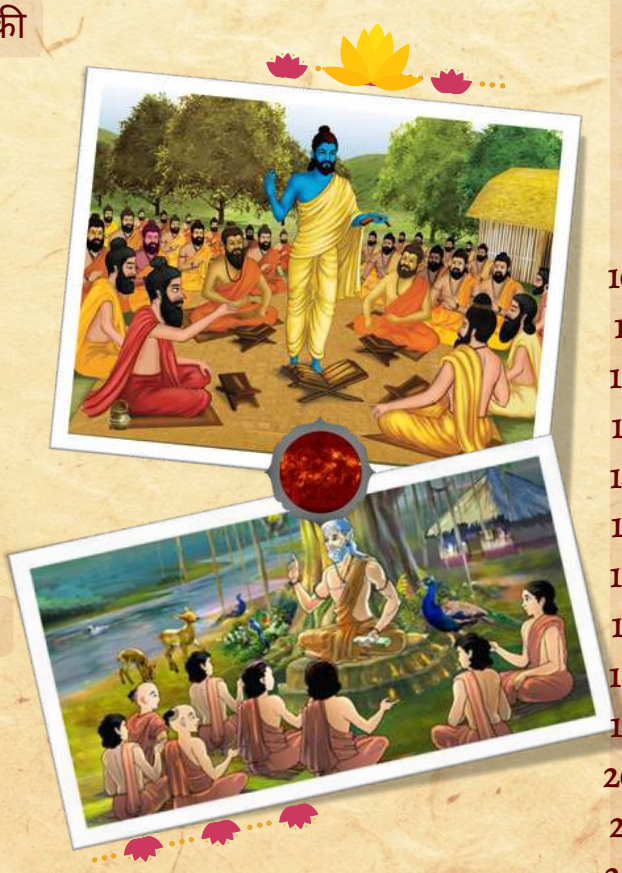

Scientific Subjects

1. Metallurgy
2. Aviation
3. Navigation
4. Space Science
5. Environment & Ecology
6. Solar System Studies
7. Lunar Studies
8. Weather Forecast
9. Battery
10. Solar Energy
11. Day Night Studies
12. Space Research
13. Astronomy
14. Geography
15. Time
16. Geology and Mining
17. Gemology and Metals
18. Gravity
19. Optics
20. Communication
21. Water, Hydraulics Vessels
22. Arms and Ammunition
23. Zoology Botany
24. Material Science

ऊपर दी गई विद्याओं के अतिरिक्त, अन्य विद्याओं के तंत्रशिक्षा के वर्णन भी हमें वेद और उपनिषद् में मिलते हैं।
ये सभी विद्याएं गुरुकुल में सिखाई जाती थीं परन्तु समय के साथ गुरुकुल और विद्याएं दोनों लुप्त हो गए।

THE HIMALAYAN MEDITATION

| मृत्योर्माऽमृतं गमय |

'Lead me from death to immortality, go beyond all limitations'
मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो- सारे सीमा से पार असीम की ओर ले चलो।

दिसंबर 2023

रविवार	सोमवार	मंगळवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
कृ. चतुर्थी ३१ 06:15 17:02					कृ. चतुर्थी १ 05:59 16:51	कृ. पंचमी २ 05:59 16:51
कृ. षष्ठी 3 06:00 16:51	कृ. सप्तमी ४ 06:01 16:51	कृ. अष्टमी ५ 06:01 16:51	कृ. नवमी ६ 06:02 16:51	कृ. दशमी ७ 06:03 16:52	कृ. उत्पना एकादशी ८ 06:03 16:52	कृ. उत्पना एकादशी ९ 06:04 16:52
कृ. द्वादशी १० प्रदोष व्रत 06:05 16:52	कृ. त्रयोदशी ११ मासिक शिवरात्री 06:05 16:53	कृ. अमावस्या १२ मार्गशिष अमावस्या 06:06 16:53	शु. प्रतिपदा १३ 06:07 16:53	शु. द्वितिया १४ 06:07 16:54	शु. तृतीया १५ 06:08 16:54	शु. चतुर्थी १६ धनु संक्रांति 06:08 16:54
शु. पंचमी १७ विवाह पंचमी 06:09 16:55	शु. षष्ठी १८ 06:09 16:55	शु. अष्टमी १९ 06:10 16:56	शु. नवमी २० 06:11 16:56	शु. दशमी २१ 06:11 16:57	शु. दशमी २२ गीता जयंती 06:12 16:57	शु. मोक्षदा एकादशी २३ 06:12 16:58
शु. द्वादशी शु. त्रयोदशी २४ प्रदोष व्रत 06:13 16:58	शु. चतुर्दशी २५ 06:13 16:59	शु. पुर्णिमा २६ मार्गशिष पुर्णिमा व्रत 06:13 16:59	कृ. प्रतिपदा २७ पौष 06:14 17:00	कृ. प्रतिपदा २८ 06:14 17:00	कृ. द्वितिया २९ दत्त जयंती 06:15 17:01	कृ. तृतीया ३० संकष्टी चतुर्थी 06:15 17:02

'एक अभ्यास के रुप में ध्यान कौशल आपकी चेतना के स्तर को बढाती है और आपके मन को शान्ती और शान्ती के उच्च स्तर तक बढाती है'

THE HIMALAYAN MEDITATION

अब आप सोच रहे होंगे

ऋषियों के लिए यह सब कैसे संभव हुआ

कि कई साल पहले विज्ञान, भौतिकी, गणित, चिकित्सा, ब्रह्मांड विज्ञान, खगोल विज्ञान, ज्योतिष और प्रौद्योगिकी के तथ्यों, सिद्धांतों की खोज उन्होंने कैसे की?

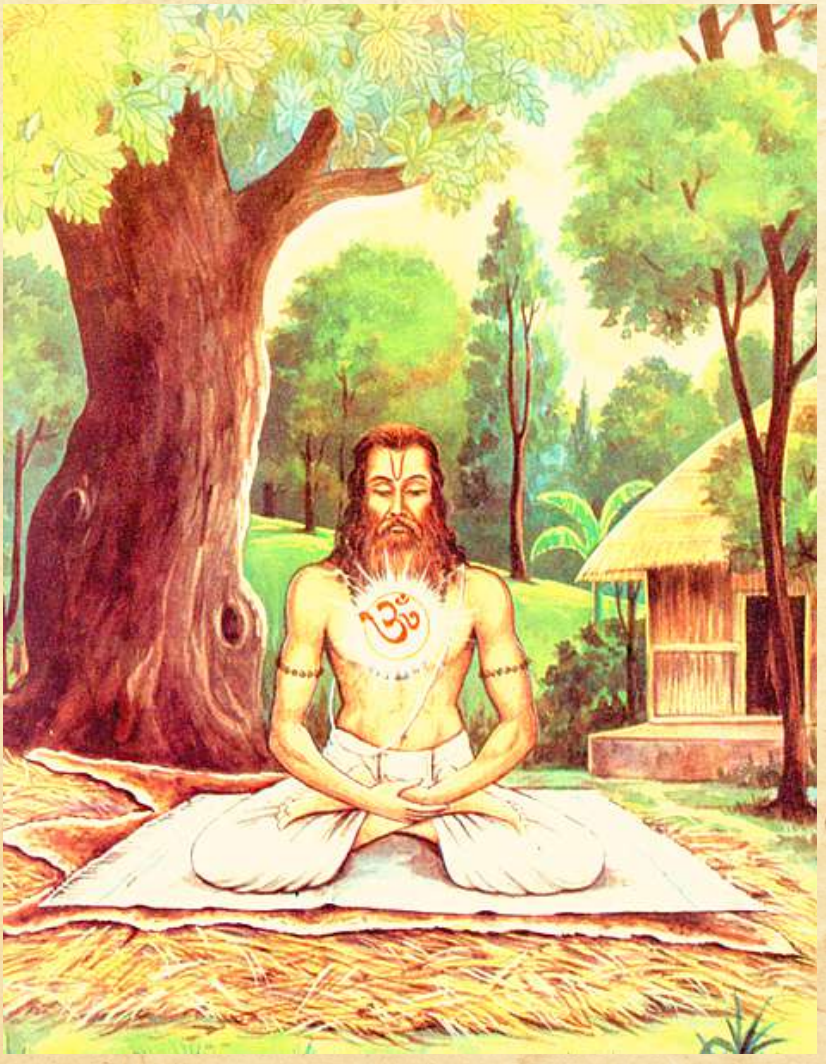

उत्तर है

ध्यान

THE HIMALAYAN MEDITATION

The Himalayan Meditation
Social Media Handles

THM Website:

https://thehimalayanmeditationadipurusha.com/

Please do like, subscribe and follow

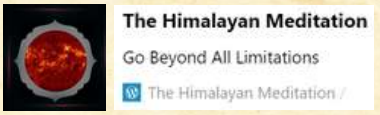

YouTube Channels:

- **The Himalayan meditation :**
  https://www.youtube.com/channel/UCAGywICJMxSoWbheDxRgSag

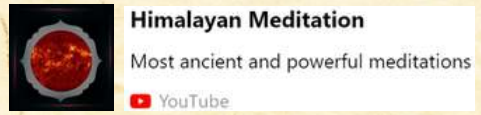

- **Bhagvad Geeta:**
  https://www.youtube.com/channel/UCyj79D9ak5V8AmDxS12NWeg

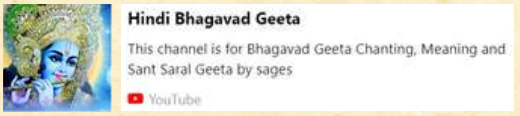

FB Pages:

- **The Himalayan meditation :**
  https://www.facebook.com/HimalayanMeditationOfficial

- **Bhagvad-Gita /Santh Saral Gita:**
  https://www.facebook.com/Saralbhagavadgeeta/

Instagram Pages:

- **The Himalayan meditation :**
  https://www.instagram.com/thehimalayanmeditation/
- **Rishiparampara**
  https://www.instagram.com/rishi_parampara/
- **Adipurusha**
  https://www.instagram.com/theadipurusha/
- **Bhagavad Geeta**
  https://www.instagram.com/saral.bhagavad.geeta/

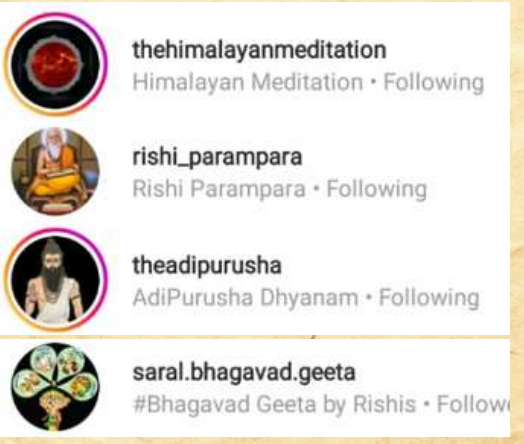

- **Join us in spreading more and more "Glorious past of India"**
- **Volunteer for Temple Seva, Bhagavad Geeta Seva and Vedic Research Seva (Write to us thehimalayanmeditation@gmail.com)**
- **Contribute at following UPI ID for yagnas and more spread of Calendar**

UPI ID: thehimalayanseva@sbi

THE HIMALAYAN MEDITATION

ऋषियों का एक दिन

अब आपको जानने में रुचि होगी..

ऋषि अपना **दिन कैसे व्यतीत** करते हैं?
वे **दिन भर शांति कैसे बनाए रखते हैं**?
उनके बारे में **और कैसे जानें**?

हिमालय ध्यान न केवल हमें जीवन के **यौगिक तरीके** के बारे में सिखाता है, बल्कि हमें अपने दैनिक जीवन में इसे **व्यवहारिक रूप से लागू करने के निर्देश** भी देता है ताकि हमारे मन को ऋषियों की तरह शांति के उच्चतम स्तर तक ले जाया जा सके।

- **हिमालयन मेडिटेशन एक तनाव मुक्त, रोग मुक्त, संतुलित, एकाग्र और सचेत जीवन जीने का प्रवेश द्वार है, जो उच्च लोकों के लिए आध्यात्मिक द्वार खोलता है।**
- **एक वास्तविक ध्यान ऐप - निर्देशित और सेल्फ-मोड दोनों में उपलब्ध शक्तिशाली प्राचीन ध्यान के साथ प्रत्येक आत्मा को ऊपर उठाने के लिए एक ऐप।**
- **निर्बाध ध्यान अनुभव के लिए विज्ञापन मुक्त और ऑफलाइन मोड ध्यान सत्र।**
- **मेडिटेशन - सेल्फ मोड में २४ विभिन्न शक्तिशाली मेडिटेशन और नए पन की ५००+ संभावनाओं के साथ निर्देशित मोड।**

DOWNLOAD THE LINKS

HIMALAYAN MEDITATION APPS

Himalayan Meditation (English)

Scan and Donwload the app from Google Play Store

Adi Purusha (Hindi)

Scan and Donwload the app from Google Play Store

Contribute as per your wish at the following UPI ID

thehimalayanseva@sbi

ऋषि कहते हैं..

अहं कृष्णदासः!!

THE HIMALAYAN MEDITATION